बलिया जनपद के शैक्षिक परिद्श्य का एक भौगोलिक अध्ययन

अजीत कुमार यादव [1], डॉ० आरती विश्नोई [2]
[1] शोध छात्र, भूगोल विभाग, पी. पी. एन. कालेज कानपुर
[2] प्रोफेसर, भूगोल विभाग, पी. पी. एन. कालेज कानपुर

शोध सारांशः-

ज्ञान के माध्यम से मानवता को आदर्श एवं विकसित स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। शिक्षित समाज अपने अर्जित ज्ञान, विवेक और कौशल का उपयोग सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास में प्रभावी रूप से कर सकता है। ज्ञान केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन, समानता और सभ्य विकास की आधारशिला भी है। हालांकि ज्ञान और शिक्षा की उपलब्धता तथा उसके उपयोग में लैंगिक एवं सामाजिक विभेद व्यवहारिक रूप से दिखाई देते हैं। स्त्री और पुरुष के बीच शिक्षा, अवसर तथा संसाधनों की असमान उपलब्धता सामाजिक संरचना में विद्यमान भेदभाव को स्पष्ट करती है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी उसके ज्ञानार्जन और शैक्षिक अवसरों को प्रभावित करती है। यदि शिक्षा केवल संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर होती, तो विभिन्न सामाजिक समूहों में शिक्षा का स्तर लगभग समान होता; किंतु सामाजिक मान्यताएँ, पारिवारिक वातावरण, आर्थिक क्षमता और लैंगिक दृष्टिकोण इसके स्वरूप को प्रभावित करते हैं। शिक्षा एक महत्वपूर्ण मानवीय संसाधन है, जो व्यक्ति की क्षमताओं का विकास कर उसकी दैनिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों को सरल, उपयोगी और प्रभावी बनाती है। अतः समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता तथा सतत् मानव विकास के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द साक्षरता की भूमिका, बहुआयामी विकास, संस्थानिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति।

प्रस्तावनाः- मानव का ज्ञान ही सबसे बड़ा आभूषण है, ज्ञान के द्वारा ही, संसाधन को परिलक्षित कराया जा सकता है, ज्ञान के द्वारा ही मानवता को आदर्श रूप में गढ़ा जा सकता है। ज्ञान एवं मानवीयता के विकास के लिए शिक्षा सोपान है ज्ञान के लिए शिक्षा प्राणवायु है। किसी व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति साक्षरता एवं शिक्षा के सीढ़ी पर चढ़कर ही प्राप्त होता है। शिक्षा विभिन्न ज्ञात अज्ञात माध्यमों से प्राप्त होती रहती है जिससे व्यक्ति अपने अन्दर की कमियों को सुधारता है। व्यक्ति के जीवन में ज्ञान प्राप्त करने के अवसर समय के व उम्र के साथ-साथ बदलते रहते है जहां बालपन में व्यक्ति परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त करता है वही धीरे-धीरे ज्ञानात्मक प्रवृति से हटकर वर्णनात्मक एवं तर्कसंगत स्वरूप को ग्रहण करता है। शिक्षा अपनी प्रवृतियों के आधार पर प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा के रूप में मौजूद है। साथ ही साथ तकनीकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के संस्थान भी मौजूद रहकर शिक्षा के माध्यम से ज्ञान के स्तर को मजबूर करते है। शिक्षा का प्रभाव सामाजिक एवं रोजगार, आय के अवसर व जीवनशैली, व्यवसायिक स्वरूप पर भी व्यापक रूप में पड़ता है।

शिक्षित व्यक्ति अपने ज्ञान के माध्यम से राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका को समझते हुए साकारात्मक योगदान करता है। राष्ट्र के सतत् विकास के प्रति अपनी समझ का प्रयोग कर देश के नागरिकों को सतत विकास की समझ के प्रति जागरूक कर ज्ञान को प्रयोगात्मक स्वरूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। ज्ञान का स्वरूप प्रयोगात्मक रूप में दो रूपों में बंटा होता है। पुरूष अपने ज्ञान का उपयोग अपने सम्बन्धित कार्यो में करता है जबकि महिलाएं अपने ज्ञान का उपयोग अपने सम्बन्धित कार्यों में करती है। शिक्षा व्यवहारों में परिवर्तन के रूप में परिलक्षित होती है। शिक्षा एवं सामाजिक एवं आर्थिक सुधारों में सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। शैक्षिक विकास से आर्थिक

विकास के लिए प्रशिक्षित कामगार प्राप्त होते है साथ ही साथ अधिक लाभ प्राप्त करने वाली प्रविधियों का उपयोग सीखने का एवं प्रयोग करने का मौका मिलता है। शिक्षा के द्वारा कार्य क्षमता एवं गुणवता को तरासने का मौका मिलता है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति मानव से विशिष्ठ मानव के सम्मान को प्राप्त करता है। जीवन के लिए प्रयोग होने वाले संसाधनों के द्वारा मानव सदैव अपने जवन को सरल व सुविधायुक्त बनाने का प्रयास करता है इसमें शिक्षा भी एक संसाधन के रूप में मानव जीवन एवं मानवीय क्रियाओं को आसान व जीवनोपयोगी बनाने में योगदान देती है।

साहित्य समीक्षाः

गुप्ता एवं चक्रवर्ती (2022) ने बलिया जिले के आर्सेनिक प्रभावित क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक असमानता का अध्ययन किया। अध्ययन में 400 महिलाओं को सम्मिलित करते हुए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आँकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि महिलाओं की शैक्षिक स्थिति उनकी आयु, जाति तथा सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। अध्ययन में निरक्षर महिलाओं का अनुपात उल्लेखनीय पाया गया तथा उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम थी। निम्न सामाजिक समूहों में शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत कमजोर पाई गई। यह अध्ययन बलिया जिले में शिक्षा, लैंगिक असमानता, सामाजिक संरचना तथा आर्थिक स्थिति के पारस्परिक संबंध को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

वर्मा एवं राय (2022) ने बलिया जिले की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना में हुए परिवर्तनों का भौगोलिक अध्ययन किया। अध्ययन में जिले के विभिन्न विकासखंडों को इकाई मानकर जनगणना के आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन से विभिन्न विकासखंडों में व्यावसायिक संरचना की स्थानिक विषमता स्पष्ट हुई। यद्यपि अध्ययन का मुख्य विषय शिक्षा नहीं था, फिर भी इसके निष्कर्ष शैक्षिक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि परिवार की व्यावसायिक एवं आर्थिक स्थिति बच्चों की शिक्षा, विद्यालयी निरंतरता तथा उच्च शिक्षा के अवसरों को प्रभावित करती है। इस प्रकार यह अध्ययन बलिया के शैक्षिक परिदृश्य के सामाजिक-आर्थिक आधार को समझने में सहायक है।

शुक्ला एवं तिवारी (2022) ने उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में साक्षरता के लैंगिक अंतर का विकासखंड स्तर पर अध्ययन किया। अध्ययन में जनगणना के आँकड़ों का उपयोग करके पुरुष एवं महिला साक्षरता के मध्य अंतर का स्थानिक विश्लेषण किया गया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि किसी जिले की समग्र साक्षरता दर के आधार पर उसकी वास्तविक शैक्षिक स्थिति को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता, क्योंकि विभिन्न विकासखंडों में पर्याप्त स्थानिक भिन्नताएँ विद्यमान होती हैं। यह अध्ययन बलिया के संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि इसके आधार पर बलिया के विभिन्न विकासखंडों में पुरुष-महिला साक्षरता अंतर तथा शैक्षिक विषमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सक्शी एवं बानो (2023) ने उत्तर प्रदेश में साक्षरता की लैंगिक असमानता का स्थानिक अध्ययन किया। अध्ययन में विभिन्न जिलों के पुरुष एवं महिला साक्षरता स्तरों की तुलना करते हुए लैंगिक असमानता को मापने का प्रयास किया गया। अध्ययन से पता चला कि उत्तर प्रदेश के जिलों में महिला एवं पुरुष साक्षरता के मध्य अंतर समान नहीं है तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में यह असमानता महत्वपूर्ण रूप से दिखाई देती है। बलिया में भी लैंगिक साक्षरता अंतर अध्ययन का महत्वपूर्ण पक्ष है। यह अध्ययन बलिया जिले में महिला शिक्षा की स्थिति तथा क्षेत्रीय असमानता के अध्ययन के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

गुप्ता एवं गुप्ता (2025) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में साक्षरता की लैंगिक असमानता का स्थानिक-कालिक अध्ययन किया। अध्ययन में विभिन्न जिलों के साक्षरता आँकड़ों की तुलना करते हुए समय के साथ पुरुष एवं महिला साक्षरता में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में महिला शिक्षा की स्थिति

में सुधार हुआ है, लेकिन विभिन्न जिलों के मध्य अभी भी पर्याप्त स्थानिक असमानताएँ विद्यमान हैं। सामाजिक परंपराएँ, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा महिलाओं की सामाजिक स्थिति शिक्षा के अवसरों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। बलिया पूर्वी उत्तर प्रदेश का प्रमुख जिला होने के कारण यह अध्ययन उसके शैक्षिक विकास और लैंगिक असमानता को क्षेत्रीय संदर्भ में समझने में सहायक है।

थॉमस एवं स्वामीनाथन (2025) ने उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की उपलब्धियों और विद्यमान अंतरालों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में बलिया जिले के रसड़ा विकासखंड स्थित महतवार गाँव को भी सम्मिलित किया गया। विभिन्न समय अवधियों में किए गए सर्वेक्षणों के आधार पर साक्षरता, विद्यालयी उपस्थिति तथा शिक्षा के वर्षों में हुए परिवर्तन का अध्ययन किया गया। अध्ययन से पता चला कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति में सुधार हुआ है और विशेष रूप से महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है। फिर भी सामाजिक एवं आर्थिक आधार पर शैक्षिक असमानता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। यह अध्ययन बलिया जिले के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें बलिया के ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त प्राथमिक जानकारी का उपयोग किया गया है।

मिश्रा, मौर्य एवं कुमार (2026) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में साक्षरता तथा कार्यबल भागीदारी में लैंगिक असमानता का स्थानिक अध्ययन किया। अध्ययन में पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों की तुलना करते हुए महिला एवं पुरुषों के मध्य साक्षरता तथा आर्थिक भागीदारी के अंतर का विश्लेषण किया गया। अध्ययन ने स्पष्ट किया कि महिला शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया जाता है। सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ महिलाओं की शिक्षा तथा रोजगार के अवसरों को प्रभावित करती हैं। बलिया को पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संदर्भ में समझने के लिए यह अध्ययन उपयोगी है तथा यह शिक्षा और महिला सशक्तीकरण के भौगोलिक संबंध को स्पष्ट करने में सहायता करता है।

अनीश, माया एवं अनीश (2024) ने भारत में शैक्षिक असमानता का अनुभवजन्य अध्ययन किया। अध्ययन में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के बीच शिक्षा के अवसरों तथा उपलब्धियों में अंतर का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से पता चला कि शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता अपेक्षाकृत अधिक बनी हुई है। आर्थिक स्थिति, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा उच्च शिक्षा तक सीमित पहुँच इसके प्रमुख कारणों में शामिल हैं। बलिया जिले के संदर्भ में यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि जिले में ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा निवास करता है। इसलिए ग्रामीण-नगरीय विभेद और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बलिया के शैक्षिक अध्ययन में सम्मिलित करना आवश्यक है।

राम गोपाल (2022) ने उत्तर प्रदेश में गरीबी तथा शैक्षिक असमानता के संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य शिक्षा की उपलब्धता तथा शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि आर्थिक कठिनाइयाँ तथा सामाजिक पृष्ठभूमि शिक्षा के अवसरों को प्रभावित करती हैं। अध्ययन में पुरुष एवं महिला साक्षरता के मध्य भी पर्याप्त अंतर पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा को केवल विद्यालयों की संख्या अथवा साक्षरता दर के आधार पर नहीं समझा जा सकता, बल्कि व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को भी अध्ययन में शामिल करना आवश्यक है। यह निष्कर्ष बलिया जिले में शिक्षा एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

अध्ययन का उद्देश्यः-

- बहुआयामी विकास में साक्षरता की भूमिका को रेखांकित करना।
- शिक्षा का सामाजिक, आर्थिक व्यवहारों पर प्रभावों को रेखांकित करना।

- शिक्षा के राजनैतिक चेतना व सांस्कृतिक बदलावों पर प्रभावों को अध्ययन करना।
- शैक्षिक स्तर पर संसाधन के प्रभावों को समझना।

अध्ययन क्षेत्रः- उ0प्र0 के आजमगढ़ मण्डल के पूर्वी हिस्से में बलिया 35^{0}33” उत्तर से 26^{0}11” उत्तरी व 83^{0}28” पूर्वी से 84^{0}39” पूर्वी के मध्य त्रिभुजाकार जो 3168 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल में फैला है। जिसकी उत्तरी सीमा धाधरा, पश्चिमी सीमा टोंस व दक्षिणी सीमा गंगा नदी द्वारा निर्धारित होती है। जो प्रशासनिक रूप से 6 तहसीलों बलिया सदर, बांसडीह, बैरिया, सिकन्दरपुर, बेल्थरारोड, रसड़ा तथा 17 विकासखण्ड में बंटा हुआ है।

मानचित्र सं0-01

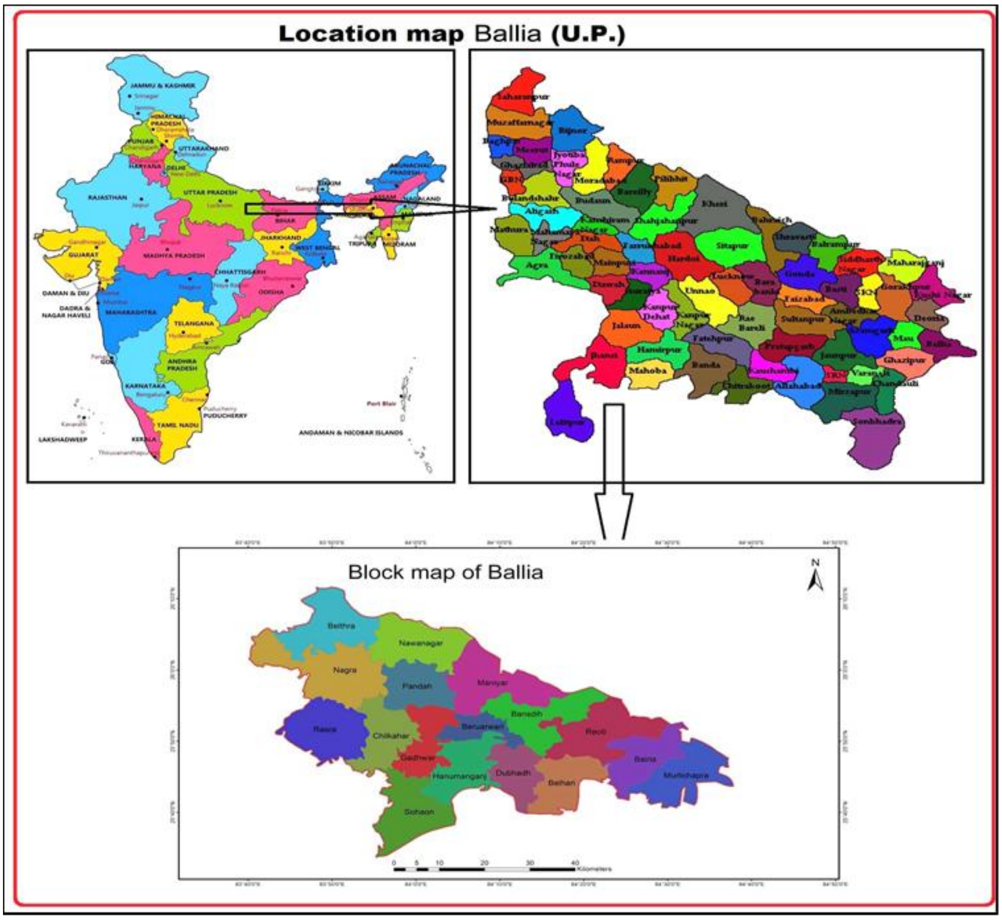

स्रोत्र- जिला सांख्यिकी पत्रिका 2017

आकड़ो का संग्रहण एवं विधितंत्रः यह शोध पत्र मुख्यतया द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है पर विश्लेषण व व्याख्या की गयी है। जो कम्प्यूटर एवं आधुनिक तकनीक के प्रयोग द्वारा निर्मित चित्रों से स्पष्ट किया जायेगा।

सारणी-1

बलिया जनपद में शिक्षण संस्थाएं - 2017

क्र0सं0	विकासखण्ड	निम्न प्राथमिक	उच्च प्राथमिक	माध्यमिक	महाविद्यालय	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	औद्योगिक प्रशिक्षण	कुल संस्थाएं

1	सीयर	224	64	112	18	3	1	422
2	नगरा	256	90	90	20	4	0	460
3	रसड़ा	208	60	54	20	3	1	346
4	चिलकहर	151	63	16	7	0	0	237
5	नवानगर	172	64	25	3	0	1	265
6	पन्दह	160	54	10	4	3	0	231
7	मनियर	133	56	11	2	0	0	202
8	बेरूआरबारी	91	29	15	2	2	0	139
9	बांसडीह	131	43	16	4	2	0	196
10	रेवती	134	42	14	3	2	0	195
11	गड़वार	179	65	15	2	1	0	262
12	सोहाव	123	48	19	2	2	0	194
13	हनुमानगंज	133	55	27	4	3	3	225
14	दुबहड़	131	40	25	1	1	0	198
15	बेलहरी	77	25	10	0	0	0	112
16	बैरिया	113	53	9	4	2	0	181
17	मुरली छपरा	104	39	7	0	0	1	151
	कुल-	2520	890	475	96	28	7	4016

स्रोत- जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बलिया 2017

चित्र संख्या: 02: शिक्षण संस्थाएं

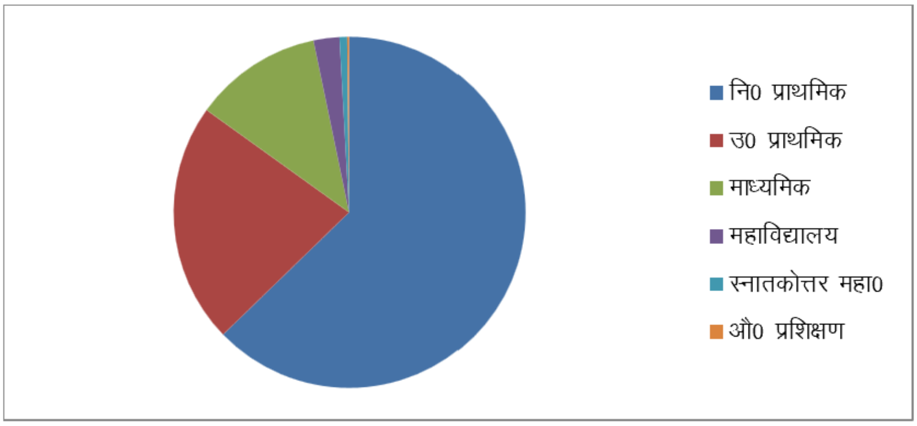

स्रोत-जिला सांख्यिकी पत्रिका 2017 के आकड़ा विश्लेषण पर आधारित

सारणी-2

बलिया जनपद में विकासखण्डवार साक्षरता प्रतिरूप - 2017

क्र0सं0	विकास खण्ड	कुल साक्षरता	पुरूष साक्षरता	महिला साक्षरता
1	सीयर	70.49	82.76	61.93
2	नगरा	72.05	82.77	61.13
3	रसड़ा	67.38	77.08	57.26
4	चिलकहर	70.34	81.34	58.88
5	नवानगर	71	81.35	60.31
6	पन्दह	74.81	86.34	63.1
7	मनियर	63.72	74.19	53.03
8	बेरूआरबारी	57.77	67.19	48
9	बांसडीह	67.88	80.1	54.81
10	रेवती	71.31	85.03	56.32
11	गड़वार	78.73	90.82	66.2
12	सोहांव	70.14	81.13	58.05

13	हनुमानगंज	75.84	85.93	64.76
14	दुबहड़	66.31	76.45	55.02
15	बेलहरी	76.34	88.33	63.09
16	बैरिया	64.68	75.08	53.53
17	मुरली छपरा	69.77	82.42	55.81
	योग-	**70.94**	**81.49**	**59.75**

स्रोत- जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बलिया 2017

परिणाम एवं चर्चाः

बलिया जनपद में कुल 4016 शिक्षण संस्थानों के सहयोग से अध्ययन क्षेत्र की कुल 70.94% जनसंख्या साक्षर है जो प्रादेशिक साक्षरता प्रतिशत 67.10 से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में पुरूष साक्षरता 81.49% जो कि प्रदेश के पुरूष साक्षरता प्रतिशत से अधिक है वही महिला साक्षरता 59.75% है जो प्रादेशिक महिला साक्षरता 57.02% से अधिक है।

अध्ययन क्षेत्र बलिया में साक्षरता की स्थिति का विकासखण्डवार विश्लेषण स्पष्ट करता है कि साक्षरता का स्तर पूरे जनपद में समान नहीं है, बल्कि इसमें उललेखनीय स्थानिक विषमता विद्यमान है। साक्षरता दर एवं शैक्षिक संस्थानों की संख्या को आधार बनाकर विकासखण्डों को अति उच्च, उच्च, मध्यम, निम्न व अति निम्न स्तरों में वर्गीकृत कर विश्लेषण किया गया है। यह वर्गीकरण केवल शैक्षिक उपलब्धि का चित्र पस्तुत नहीं करता है अपितु क्षेत्रीय सामाजिक-आर्थिक विकास और मानव संसाधन की गुणवत्ता तथा शैक्षिक गुणवतता पूर्ण स्तर तक प्राप्ति में विद्यमान असमानताओं को भी स्पष्ट करता है।

मानचित्र सं0-03

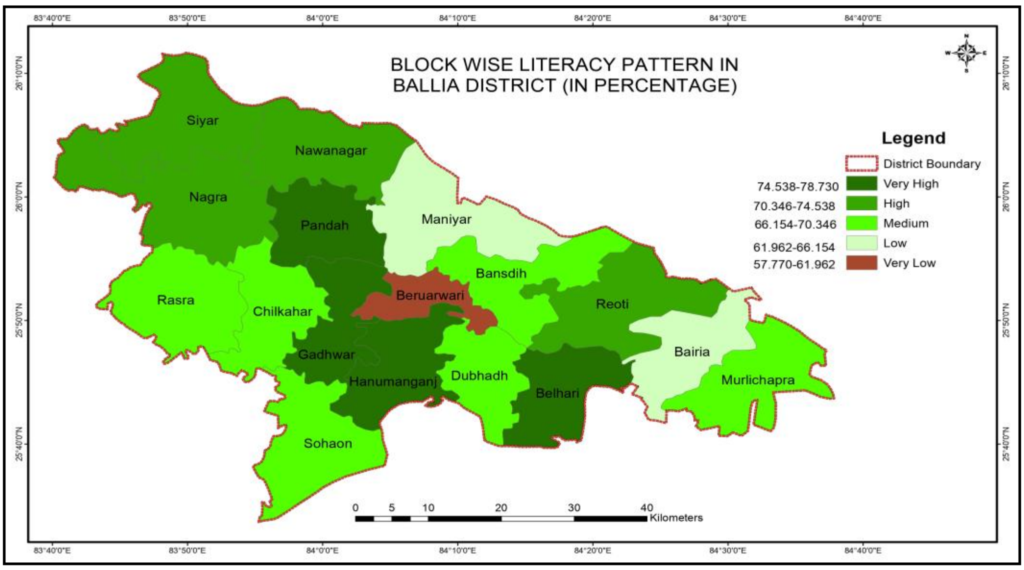

स्रोतः सारणी 2 की सहायता से आर्कमैप द्वारा निर्मित मानचित्र

1- उच्च साक्षरता दर वाले विकासखण्ड - अध्ययन क्षेत्र बलिया के विकासखण्डवार अति उच्च साक्षरता श्रेणी में पन्दह 74.81%, गड़वार 78.73%, हनुमानगंज 75.84%, बेलहरी 76.34% है इसमें गड़वार में साक्षरता दर सर्वाधिक है। जो इस क्षेत्र में बेहतर शैक्षिक वातावरण को दर्शाता है। जबकि संस्थानिक दृष्टि से अति उच्च संख्या वाले विकासखण्ड के रूप में सीयर 422 व नगरा 460 के साथ पदस्थ है। पुरूष साक्षरता में अति उच्च पन्दह 86.34%, गड़वार 90.82% व बेलहरी 88.33% के साथ स्थापित है। लैंगिक दृष्टि से भी पुरूष साक्षरता इन क्षेत्रों में अधिक है। वही महिला साक्षरता में पन्दह 63.10%, गड़वार 66.20%, हनुमानगंज 64.76%, बेलहरी 63.9% के साथ अति उच्च स्थान पर है। पुरूष साक्षरता व महिला साक्षरता के आकड़ों को देखने से प्रतीत होता है कि सामाजिक स्तर पर लैंगिक विद्वेष की भावना के कारण भी शैक्षिक स्तर में अन्तर हो सकता है।

2-उच्च साक्षरता दर वाले विकासखण्ड - अध्ययन क्षेत्र जनपद बलिया के विकासखण्डवार उच्च साक्षरता श्रेणी में सीयर 70.49%, नगरा 72.05%, चिलकहर 70.34%, नवानगर 71.00%, रेवती 71.31%, के साथ विद्यमान है जिसमें नगरा व नवानगर, रेवती जनपद औसत से अधिक साक्षरता दर धारण किये है। जहां साक्षरता का स्तर बेहतर है। संस्थानिक संख्या की दृष्टि से उच्च श्रेणी में रसड़ा 346 है। संस्थानिक संख्या अधिक होने के बावजूद रसड़ा उच्च साक्षरता स्तर की श्रेणी में स्थान नहीं रखता है जो संस्थानों की गुणवत्ता व सामाजिक जागरूकता पर प्रश्नचिन्ह् खड़ा करते है। पुरूष साक्षरता में हनुमानगंज 85.93%, मुरली छपरा 82.42%, रेवती 85.03%, सीयर 82.76%, नगरा 82.77%, के साथ पदस्थ है। महिला शिक्षा के विकासखण्डवार उच्च श्रेणी में सीयर 61.93%, नगरा 61.13%, नवानगर 60.31% के साथ विद्यमान है।

मानचित्र सं0-04

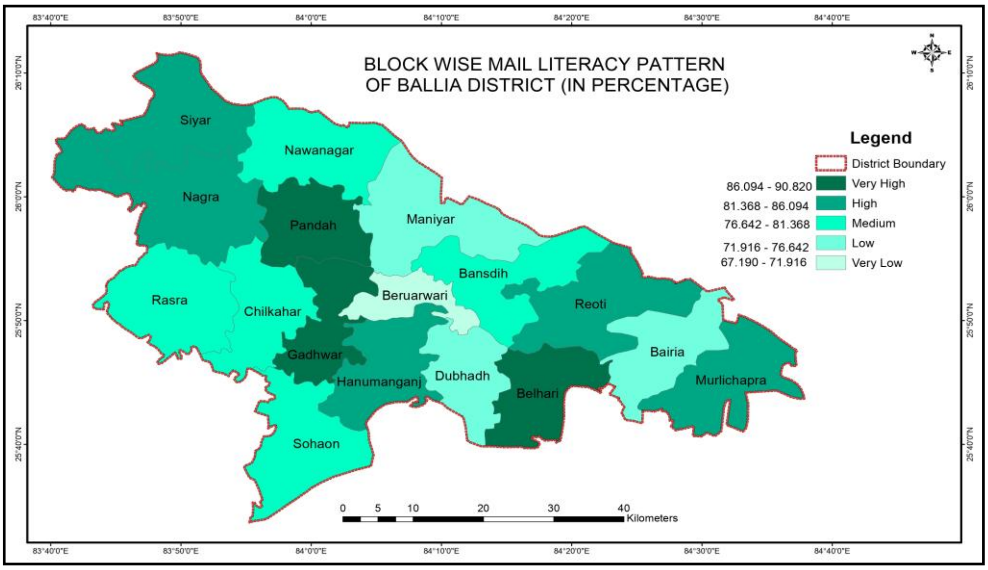

स्रोतः सारणी 2 की सहायता से आर्कमैप द्वारा निर्मित मानचित्र

3-मध्यम साक्षरता दर वाले विकासखण्ड - अध्ययन क्षेत्र के विकासखण्डवार मध्यम शैक्षिक स्तर वाले विकासखण्ड के रूप में रसड़ा 67.38%, बांसडीह 67.88%, सोहांव 70.14%, दुबहड़ 66.31%, मुरली छपरा 69.77% है। इसमें सोहांव अपनी साक्षरता सीमा की उच्च स्तर के करीब दिखाई पड़ रहा है जबकि दुबहड़ 66.31% के साथ पिछड़े स्तर को धारण कर रहा है। वही औसत संस्थानिक स्तर वाले विकासखण्ड के रूप में गड़वार 262, नवानगर 265 है। जो संस्थागत दृष्टि से मध्यम स्तर को प्राप्त करते है जबकि गड़वार साक्षरता स्तर के उच्च साक्षरता समूह में शामिल है जबकि नवानगर भी संस्थानिक दृष्टि से मध्यम स्तर को प्राप्त करता है जबकि शैक्षिक स्तर के उच्च

साक्षरता स्तर समूह में स्थान प्राप्त किया है इससे यह स्पष्ट है कि इस विकासखण्ड में उच्च गुणवत्ता युक्त संस्थाएं व अति जागरूक सामाजिक संरचना के कारण ही अपने उच्च शैक्षिक स्तर को प्राप्त किये है।

मानचित्र सं0-05

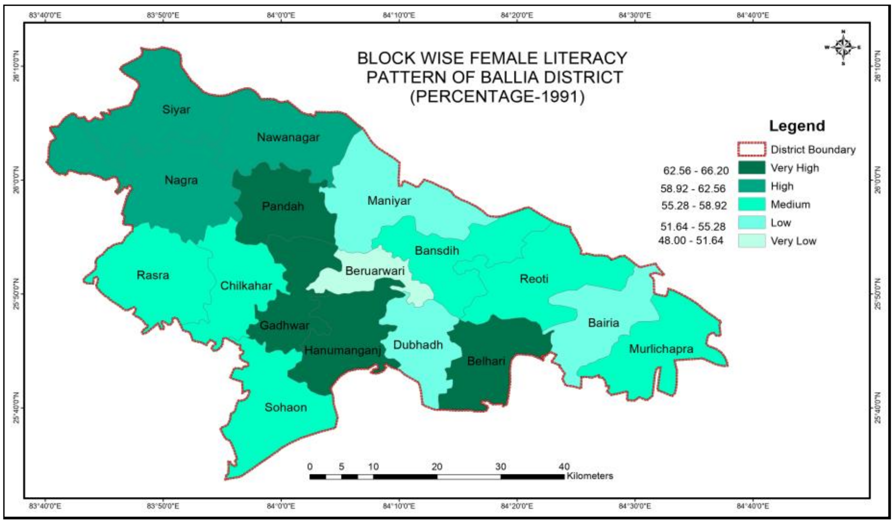

स्रोतः सारणी 2 की सहायता से आर्कमैप द्वारा निर्मित मानचित्र

पुरूष साक्षरता में मध्यम साक्षरता स्तर वाले विकासखण्ड चिलकहर 81.34%, नवानगर 81.35%, रसड़ा 77.07%, सोहाव 81.43%, बांसडीह 80.10%, साक्षरता के साथ सूचीबद्ध है। महिला साक्षरता में मध्यम साक्षरता स्तर वाले विकासखण्ड चिलकहर 58.88%, रसड़ा 57.26%, सोहांव 58.05%, बांसडीह 54.81%, रेवती 56.32%, मुरलीछपरा 55.81% के साथ स्थापित है।

4-निम्न साक्षरता दर वाले विकासखण्ड - अध्ययन क्षेत्र में संस्थाओं की संख्या की दृष्टि से निम्न स्तरीय विकासखण्ड के रूप में चिलकहर 237, पन्दह 231, बांसडीह 196, रेवती 195, हनुमानंज 194, बैरिया 181, मनियर 202, दुबहड़ 225, सोहाव 194 के रूप में विद्यमान है। वहीं साक्षरता के निम्न स्तरीय क्षेत्र के रूप में मनियर 63.72% व बैरिया 64.68% है। पुरूष साक्षरता के निम्न स्तर समूह में मनियर 74.19%, बैरिया 75.08% व दुबहड़ 76.45 शामिल है। वहीं महिला साक्षरता के निम्न स्तर समूह में दुबहड़ 55.02%, बैरिया 53.53%, मनियर 53.03% के रूप में शामिल है। इससे पता चलता है कि संस्थानों की संख्या और साक्षरता दर के बीच कोई सुदृढ़ सम्बन्ध नहीं है क्योंकि कुछ विकासखण्डों में साक्षरता दर संस्थानों की कमी के बावजूद संतोषजनक है जबकि कुछ विकासखण्डों में संस्थानों की संख्या अधिक होने के बाद भी साक्षरता स्तर निम्न व खेद जनक है।

5- अति निम्न साक्षरता स्तर वाले विकासखण्ड - अध्ययन क्षेत्र के शैक्षिक संस्थाओं की संख्या की दृष्टि से अति निम्न विकासखण्ड मुरली छपरा 151, बेलहरी 112, बेरूआरबारी 139 के रूप में स्थापित है। जबकि साक्षरता की दृष्टि से अति निम्न स्तरीय विकासखण्ड के रूप में बेरूआरबारी 57.77% के रूप में विद्यमान है। विकासखण्डवार पुरूष साक्षरता के अति निम्न स्तरीय समूह में अकेले बेरूआरबारी 67.19% के साथ विद्यमान है जबकि महिला साक्षरता के अति निम्न स्तर में भी बेरूआरबारी 48% की दर के साथ स्थापित है। संस्थानिक दृष्टि से अन्तिम पायदान परर स्थित यह विकासखण्ड शिक्षा स्तर के निम्न समूह में शामिल है जहां पर स्त्री, पुरूष शिक्षा स्तर में 19 अंक लगभग 20% का अन्तर है।

निष्कर्षः -

समग्र बलिया जनपद की शैक्षिक स्वरूप में विषमता दृष्टिगत है जो अक्रमिक रूप से विद्यमान है संस्थानिक दृष्टि से जनपद मुख्यालय से सुदूर स्थित विकासखण्ड शीर्ष पर है लेकिन प्रशासनिक पहुंच व सामाजिक जागरूकता के अभाव में वे विकासखण्ड साक्षरता स्तर में फिसड्डी सिद्व हुए है। पूरे अध्ययन क्षेत्र बलिया में शिक्षा में लैंगिक विषमता का प्रतिरूप एक अभिशाप की तरह दृष्टिगत हो रहा है। स्त्री पुरूष साक्षरता दर में लगभग 22% का अन्तर दृष्टिगत है जो स्पष्ट करता है की महिला शिक्षा के प्रति सामाजिक उदासीनता किस प्रकार प्रभावी है।

- साक्षरता के प्रतिशत व शिक्षक संस्थाओं की स्थापना में मध्य स्वच्छन्द प्रकार का सम्बन्ध पाया जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं की अधिकता के बावजूद सीयर व नगरा भी उच्च साक्षरता प्रतिशत स्तर में स्थान नहीं बना सका है जबकि सबसे कम शिक्षण संस्थानों के साथ बेलहरी शिक्षा के अति उच्च स्तर में स्थान प्राप्त कर रहा है।
- शिक्षा के परिणाम पर लिंगभेद, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का प्रभाव महसूस किया जा सकता है।
- सामाजिक व आर्थिक पिछड़ेपन से प्रभावित क्षेत्रों में साक्षरता का स्तर में कमी दर्ज की गयी है। अर्थात् साक्षरता में कमी सामाजिक व आर्थिक पिछड़ेप के कारण हो रही है।
- संचार सुलभता शिक्षा को साकारात्मक दिशा प्रदान कर रही है।

सुझावः-

अध्ययन क्षेत्र बलिया के सम्पूर्ण विकासखण्डों में संस्थानों की स्थापना एवं शिक्षा के स्त्री पुरूष अन्तराल के स्वरूप को देखकर महिला शिक्षा हेतु बालिका विद्यालयों की स्थापना, विद्यालयों तक पहुंच बनाने की परिवारिक जवाबदेही आर्थिक समस्याओं के निराकरण व सामाजिक जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्कयक है।

- शिक्षा के लिए सामाजिक मनोस्थिति में सुधार की आवश्यकता है।
- सरकार द्वारा अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था लागू हो।
- शैक्षिक संस्थानों के निर्माण के दौरान जमीनी स्थिति को ध्यान में रखा जाए।
- सरकारी धन का अधिक से अधिक सदुपयोग कर वंचित समुदाय के निवास स्थानों के पास ही संस्थान खोले जाये।
- तड़क-भड़क, दिखावा को प्रोत्साहित न किया जाए जिससे शिक्षा सर्वसुलभ हो सके।
- शैक्षिक स्तर पर शैक्षिक संस्थानों की जवाबदेही तय हो।
- सरकारी संस्थानों की कार्य प्रद्वति में सुधार कर जनमानस के अनुरूप बनाया जाए।

संदर्भ सूचीः-

1. गुप्ता, अ., एवं चक्रवर्ती, अ. (2022). बलिया जिले के आर्सेनिक प्रभावित क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक असमानता का वर्णनात्मक अध्ययन। *जीआईएस साइंस जर्नल, 9*(12), 121–128। doi:20.18001.GSJ.2022.V9I12.22.40424
2. ओझा, एस. के. (2014). *जनसंख्या एवं नगरीकरण*। प्रयागराज: बौद्विक प्रकाशन। पृ. 55।

3. भारती, सूरज। (2019). बलिया जनपद में साक्षरता प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन। *Journal of Integrated Development and Research, 119*(2), 125–130।

4. *बलिया दर्पण*। (2004). बलिया: सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग। पृ. 17।

5. सोनकर, चतुर्वेदी एवं सिंह। (2010). प्रतापगढ़ में साक्षरता की प्रवृत्ति: एक तुलनात्मक अध्ययन। *उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, 40*(3), सितंबर।

6. *जिला सांख्यिकी पत्रिका: जनपद बलिया*। (2017)।

7. Verma, K., & Rai, V. K. (2022). Changes in occupational structure of population in Ballia district: A geographical study. *National Geographical Journal of India, 66*(2), 136–149. https://doi.org/10.48008/ngji.1736

8. Shukla, S., & Tiwari, S. (2022). The unfolding of gender disparity in literacy: Block-wise evidences from Kannauj district, Uttar Pradesh. *National Geographical Journal of India, 68*(3), 218–228. https://doi.org/10.48008/ngji.1811

9. Sakshi, & Bano, S. (2023). Gender disparity in literacy in Uttar Pradesh: A spatial analysis. *Humanities and Social Sciences Communications, 10*, 962. https://doi.org/10.1057/s41599-023-02457-5

10. Gupta, A. K., & Gupta, P. K. (2025). Gender disparity in literacy: A spatio-temporal study of Eastern Uttar Pradesh, India. *International Journal for Multidisciplinary Research, 7*(3). https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i03.49382

11. Thomas, D. S., & Swaminathan, M. (2025). Educational achievements and gaps: Insights from longitudinal village studies in Uttar Pradesh. *Review of Agrarian Studies, 15*(1). https://doi.org/10.25003/RAS.15.01.0003

12. Mishra, N. K., Maurya, A., & Kumar, A. (2026). A spatial analysis of the gender disparities in literacy and workforce participation in Eastern Uttar Pradesh, India. *Indian Journal of Spatial Science, 17*(2).

13. Aneesh, M. R., Maya, K., & Aneesh, K. A. (2024). Education inequality in India: An empirical analysis using National Sample Survey data. *Journal of Development Policy and Practice*. [खंड एवं अंक का विवरण सत्यापित किया जाना आवश्यक है।] https://doi.org/10.1177/09737030241280145

14. Gopal, R. (2022). Analysis of poverty and educational inequality in Uttar Pradesh. *International Journal of Trend in Scientific Research and Development, 6*(5), 657–660.